Hkkjrh; jk"Vªh; vkUnksyu esa efgykvksa dh Hkwfedk% ,d lehf{kkRed v/;;u

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्ट़ीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
के अन्तर्गत राजनीतिक शास्त्र में पी.एच.डी. की
उपाधि हेतु प्रस्तावित रूपरेखा
2019

i;Zos{kd

डॉ0 अंजली सेठ
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाज”ाास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान विभाग
समाज विज्ञान संकाय

'kks/kkfFkZuh

रिंकी
शोध छात्रा

foHkkxk/;{kk

प्रो० पूर्णिमा जैन
समाजशास्त्र एवं राजनीतिक विज्ञान, विभाग
समाज विज्ञान संकाय

ladk; izeq[k

प्रो० कमलजीत संधु
समाज विज्ञान संकाय

lekt foKku ladk;
lekt'kkL= ,oa jktuhfrd foKku foHkkx
n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM ;wfuoflZVh½
n;kyckx] vkxjk & 282005

iLrkouk

अंग्रेजों द्वारा भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना 1600ई० में की गई थी। अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्‌देश्य से आये थे। प्लासी के युद्ध के वाद से अंग्रेजों का भारत पर प्रभुत्व बढ़ता गया। व्यवहारिक रूप से 1856 में डलहौजी के कार्यकाल का अंत था। क्योंकि लोगों के बढ़ते असंतोष से अनेक समस्यायें बढ़ रही थीं। लेकिन 1857 का विद्रोह जो मेरठ में सैन्यकमिर्योकी बगावत से शुरू हुआ था शीघ्र ही आगे बढ़ता गया और इससे ब्रिटिश शासन को एक गंभीर चुनौती मिली। यद्यपि ब्रिटिश शासन इसे एक वर्ष के अंदर ही दबाने में सफल रहा। यह एक ऐसी क्रांति थी जिसमें भारतीय शासक जनसमूह और नागरिक सेना शामिल थी, जिसने इतने उत्साह से भाग लिया कि इसे भारतीय स्वतंत्रता का पहला संग्राम कहा जा सकता है।भारतीय राष्ट्रीय स्वंतत्रता आंदोलन का इतिहास स्वतंत्रता के लिये भारतीयों के संघर्ष की महत्वपूर्ण कहानी है। स्वतंत्रता आंदोलन में समाज के सभी वर्गों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजों के विरूद्ध पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश की महिलाओं ने अपना कर्तव्य निभाया। भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इसलिये भी महत्वपूर्ण है कि उनका सामाजिक उत्थान हुये बहुत लंबा समय नहीं हुआ था। घर संभालना हो या राजनीति का क्षेत्र महिलाओं ने जिस साहस सहिष्णुता और वीरता से स्वतंत्रता आदोलन में अपनी भूमिका निभाई, वह इतिहास की धरोहर है। सन् 1857 की क्रांति के बगावत के समय राजघरानें की महिलायें आजाद भारत का सपना पूरा करने के लिये पुरूषों के साथ एक जुट हुयीं। इनमें प्रमुख थीं झांसी की रानी व इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई होल्कर। सर ह्यूरोज ने झाँसी की रानी के पराक्रम को देखते हुये कहा था कि "सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर एवं सर्वश्रेष्ठ थीं।"

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 में स्थापना ने महिलाओं को राजनीतिक मंच प्रदान किया। कांग्रेस की स्थापना के बाद से ही वार्षिक अधिवेशनों में भारतीय महिलायें प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिये आने लगी। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। यह भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेश की शुरूआत थी। इसके पश्चात मातृभूमि की खातिर राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ती ही

चलीं गयी। महिलाओं ने देश के स्वाधीनता आंदोलन में गाँधी जी को पूर्ण सहयोग व समर्थन प्रदान किया और विभिन्न क्रांतिकारी कार्यक्रमों में भाग लिया। इस सन्दर्भ में ,- vk- áe ने एक बार कहा था कि ''जब तक देश के उत्थान के लिये महिलायें अपनी भागीदारी को सिद्ध नहीं करेगी', उनके मताधिकार के प्रयास लगभग असफल ही रहेगें''¼[kjkuk ,o pkgku **P. 116**½।भारत वर्ष की विदुषी और उत्साही महिलाओं ने 1905 में बंगाल विभाजन के समय अंग्रेजी सरकार के विरोध में आन्दोलन चलाये थे और अपने विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा बंगाल में एकता स्थापित करने की शपथ ली थी। उन्होंने रक्षाबन्धन समारोह का आयोजन करके हिन्दू–मुस्लिम एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया था तथा प्रभात फेरियों के माध्यम से अपनी एकता का प्रदर्शन किया था। जिसमें अंग्रेजी सरकार को बाध्य होकर 1911 ई. में बंगाल विभाजन के आदेश को वापस लेना पड़ा था।

गाँधी जीने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में एक नवीन आत्म विश्वास, आत्म सम्मान और नवीन आत्म छवि दिलाई। वे निष्क्रिय वस्तु के समान समाज में पड़ी थी, उन्हें सक्रिय नागरिक और सुधारक का रूप गाँधी जी ने प्रदान किया। वस्तुतः गाँधी जी ने पारम्परिक प्रतीकों को सकारात्मक तरीके से प्रयोग करके महिलाओं को स्वाधीनता आन्दोलन में आने के लिये प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के सम्बन्ध में लोगों की सोच बदलने लगी। वस्तुतः chuk e tenkj के अनुसार "गाँधीजी ने महिला मुद्दों को समर्थन दिलवाया'' ¼[kjkuk ,o pkgku **P. 121**½। गाँधी के विचारों को सुनने के पश्चात् महिलायें स्वयं अपने गुण को पहचानने में सक्षम होने लगीं और उन्होंने आंदोलन में संक्रियता से भाग लेकर उसे सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। महात्मा गाँधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन चलाकर महिलाओं को उत्साहित एवं संगठित किया। 1920 के दशक में महिलाओं ने बराबरी के अधिकार पर चर्चा करना प्रारम्भ कर दिया। 1921–22 ई. में एक महिला सक्रिय कार्यकत्री में घोषणा की कि "स्वराज्य का तात्पर्य अपना राज और स्वाधीनता का अर्थ है शक्ति व ताकत का प्रयोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये''¼[kjkuk ,o pkgku **P. 117**½। सविनय अवज्ञा आंदोलन, सत्याग्रह एवं स्वदेशी प्रचार में महिलाओं ने पूर्ण उत्साह से कार्य किया। भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) में हजारों की संख्या में महिलायें घरों से बाहर निकलकर आईं। उन्होंने तन–मन से

आंदोलन में सहयोग किया। 1942 के आन्दोलन में उषा मेहता ने गुप्त रेडियों का संचालन कर आंदोलन कारियों का मार्ग दर्शन किया। भारत के क्रांतिकारी आंदोलन में भी महिलाओं ने बड़ी भूमिका निभाई। yhyk ukx uked महिला ने दीपावली संघ की स्थापना की थी। इसमें युवतियों को शस्त्र चलाने और बम बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। संगठित रूप से कर्तव्य के प्रति समर्पित होकर अनेक यातनाओं को सहते हुये उस समय राजनीतिक गतिविधियों की बागडोर संभाली जब अधिकांश राष्ट्रीय स्तर पर सरोजनी नायडू अरूणा आसफ अली, श्रीमती सुचेता कृपलानी, कमला देवी चट्टोपाध्याय, एनी बेसेट, हंसा मेहता, राजकुमारी अमृता कौर जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी भूल नहीं पायेगा। अरूणा आसफ अली ने 1942ई. के भारत छोड़ो में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अपने बन्दीकरण को टालने के लिये चार वर्ष तक भूमिगत रहीं।

एक विद्वान ने उनके सन्दर्भ में लिखा है कि "यदि 1857ई. के विद्रोह की नायिका झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई थीं तो 1942ई० के आंदोलन की नायिका निःसन्देह अरूणा आसफ अली थी'' ¼[kjkuk ,o pkgku **P. 120**½। गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन से लेकर भारत की स्वाधीनता तक महिलाओं का राष्ट्रीय आंदोलन में जो योगदान था वह भारतीय परिवेश में उनकी जागरूकता एवं परिवर्तनों को दर्शाता है। जब देश आजाद हुआ तो नये भारत के निर्माण में भी महिलाओं द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। सुचेता कृपलानी, पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। सरोजनी नायडू पहली महिला राज्यपाल बनीं। विजय लक्ष्मी पंडित ने संयुक्त राष्ट्र संघ में नेतृत्व किया। इंदिरा गाँधी जो कि पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं। जो आयरन लेडी के नाम से जानी जाती हैं।

उपरोक्त महिलाओं के अतिरिक्त ऐसी कई महिलायेंहैं जिन्होंने प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) तक राष्ट्रीय आंदोलन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया। वे महिलायें भारतीय इतिहास से अदृश्य हैं, उन महिलाओं ने स्वतत्रंता के लिये अपने परिवार और प्राणों की आहूति दे दी। ऐसी महिलाओं का भी अध्ययन करना आवश्यक है मन में उत्सुकता प्रकट होती है कि और कौन–कौन वीर नारियाँ हैं जिन्होंने हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में वीरता का परिचय दिया और अंग्रेजों को भारत छोड़ने को मजबूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

स्वाधीनता आंन्दोलन को केवल एक बाहरी राजनीतिक आन्दोलन न मानकर एक विशेष प्रकार का त्याग और बलिदान स्वीकार किया गया। यह आंदोलन एक धार्मिक प्रक्रिया और सांस्कृतिक जंग था। भारतीय संस्कृति की रक्षा की चेतना की वृद्धि की गई राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं का महान योगदान रहा। उस समय भारत में महिला आन्दोलन पुष्पित व पल्लवित हो रहे थे। भारतीय महिलाओं ने अपने आन्दोलन के मुकाबले में स्वाधीनता आन्दोलन को प्राथमिकता प्रदान की।

leL;k dFku

किसी भीराष्ट्र के निर्माण में उस राष्ट्र की आधी आबादी की भूमिका की महत्ता से इनकार नहीं किया जा सकता है। आधी आवादी यदि किसी भी कारण से निष्क्रिय रहती है तो उस राष्ट्र या समाज की समुचित और उल्लेखनीय प्रगति के बारे में कल्पना नहीं की जा सकती है। लेकिन प्राचीन स्थितिके साथ–साथ भारतीय समाज में उत्तरवैदिक काल से ही महिलाओं की स्थिति निम्नतरहोती गई और मध्यकाल तक आते आते समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों ने महिलाओं की स्थिति को और बद्तर कर दिया। स्वतन्त्रता पूर्व भी महिलाऐं अशिक्षा, रूढ़िवादिता से बंधी हुई थीं। समाजसुधारकों वआधुनिकता के आगमन एवं शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाना आरंभ किया। जिसका परिणाम राष्ट्र की समुचित प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर होने के रूप में सामने है। वर्तमान समय में महिलायें प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। सामाजिक राजनीति धार्मिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में सभी प्रकार की बाधाओं को पार करते हुये वे निरंतर प्रगति की ओर आगे बढ़ रहीं हैं।

लेकिन भारतीय इतिहास में देखने पर ज्ञात होता है कि पुरूषों के योगदान को तो विस्तृत रूप में लिखा गया है। परन्तु महिलाओं के योगदान के नाम परकुछ नामों को ही सम्मिलित किया गया है। जैसे रानी लक्ष्मी बाई, अरूणा आसफ अली, बेगम हजरत महल, आदि इनमें से अधिकांश महिलायें उच्च वर्ग या राजघरानों से सम्बन्धित थीं। लेकिन सैंकड़ों महिलायें ऐसी भी हैं जिन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये महिलायें या तो सामान्यवर्ग या दलित वर्ग की थीं। जिनके योगदान की भारतीय इतिहास में अनदेखी की गई है।

lkfgR; i|ufo.ykdu

^lj l^] flag FkEeu ¼1995½^^ voUrhckbZ yks/kh &1857 dh vej cfynkuh ^^ इस जीवनी में लेखक ने वीरांगना अवन्तीबाई लोधी का बलिदान सम्पन्न वीर जीवन को विवेचित किया है। विन्ध्य परिसर एवं नर्मदा घाटी का पौराणिक , ऐतिहासिक , राजनैतिक तथा सामाजिक वृत भी विविधतापूर्वक प्रस्तुत किया गया है। चन्देल , लोधी कलपुरि राजवशो का इतिहास भी विवेचित किया गया है। भारत में ब्रिटिश राज्य तथा–1857 ई0 स्वतन्त्रता संग्राम को चित्रित किया गया है। वीरांगना अवन्तीबाइ पर वृन्दावनलाल वर्मा ,मुरली प्रसाद वर्मा, एवं इकबाल बहादुर देवसरे तथा –1857 ई0 के स्वतन्त्रता संग्राम पर पं0 सुन्दरलाल के ग्रन्थों से भरपूर लाभ उठाते हुए, लेखक ने नई स्थापनाएँ भी की हैं। प्रस्तुत जीवनी वस्तुपरक वृत्त न होकर एवं कलाकृति बन गई है अवन्तीबाई लोधी जाति की ज्योति थीं। हिन्दू लोधों में अवन्तीबाइ, स्वामी बृहमानन्द इत्यादि विख्यात है। श्री थमम्नसिहं ने अपने ढंग और आयामों से गौरवशाली लोध जाति के इतिहास को उजागर किया है, जो प्रशंसनीय है अवन्तीबाइ लोधी ने अपने संघर्ष और बलिदान से समस्त भारत में एक ऐसी भावना भर दी थी की राष्ट्र का नवयुवक तथा प्रबुद्ध वर्ग जाग्रत हो गया था और राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए एक अनवरत संघर्ष से जुड़ गया था , जिसका परिणाम राष्ट्र की स्वाधीनता के रूप में हमें प्राप्त हो चुका है।

Taneja, Anup (2005) "Gandhi, women and the national movement, 1920-47"प्रस्तुत पुस्तक मे लेखक ने महिलाओं की भारत में स्थिति का विस्तृत विवेचना किया है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गान्धीवादी युग से प्रारम्भिक स्थिति की महिलाओं में किस स्तर की जागरूकता थी का विशद वर्णन राष्ट्रवादी प्रस्ताव के माध्यम से किया है। 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में निम्न प्रकार की सामाजिक बुराईयाँ समाज में विद्यमान थी जैसे– बाल विवाह, सतीप्रथा, दहेजप्रथा,0 विधवा पुर्नविवाह पर रोक। विधवा महिलाएँ असम्मान का जीवन जीने के लिए मजबूर थी। शिक्षा का विशेष अभाव ने उक्त बुराइयों को और अधिक घनीभूत किया। 19 वीं शताब्दी के समाज सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा पर विशेष जोर दिया। इस पुस्तक के द्वितीय अध्याय में गाँधी जी ने सामाजिक बुराइयों की तीन आलोचना की तथा महिला तथा पुरूष अधिकारों की समानता पर विशेष बल दिया। गाँधी जी ने महिलाओं को राजनीति में विशेष रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। तीसरे अध्याय में असहयोग अन्दोलन व खिलाफत आन्दोलन में महिलाएं विशेष रूप से शामिल हुई। इस अध्याय में लेखक ने मुस्लिम महिलाओं

के शामिल होने के प्रयासो की भी सराहना की। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी महिलाओं ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया इसका वर्णन लेखक ने चर्तुथ अध्याय स्पष्टरूप से किया है। वारदोली सत्याग्रह से लेकर नमक सत्याग्रह तक में भी महिलाओं ने विशेष रूप से भाग लिया। पाँचवे अध्याय में लेखक ने कांग्रेस पार्टी के माध्यम से महिलाएं कैसे सक्रिय हुई राजनीति में इसका विस्तृत वर्णन किया है। महिलाओं ने –1937 के आम चुनाव में भी सक्रिय भाग लिया व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी भाग लिया तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इस पुंस्तक के छठे अध्याय में महिलाओं के समीक्षात्मक योगदान का विस्तृत वर्णन मिलता है।

Thapar, Suruchi (2006) 'Women in National Movement' इस पुस्तक में लेखिका ने साधारण मध्यम वर्ग की महिलाओं 1930–40 के दौरान चल रहे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी भाषी क्षेत्र की महिलाओं के योगदान की भूमिका का चित्रण किया है। काकोरी ट्रेन डकैती में कानपुर की महिला राजकुमारी गुप्ता ने काकोरी ट्रेन डकैती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। महिलाओं की भूमिका राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान अति महत्वपूर्ण थी। उत्तर प्रदेश की महिलाओं का भी अत्यन्त योगदान देखने को मिलता है। महिला क्रान्तिकारियों के जीवन को गांधी वादी विचार धारा ने विशेष रूप से प्रभावित किया था। तथा महिला आन्दोलकारियों ने आम घरेलू महिलाओं में भी बलिदान की भावना जाग्रत कर दी थी। पुरूष लेखक तथा महिला लेखकों के विभिन्न पत्रिकाओं में लेखन के माध्यम से महिला आन्दोलनकारियों के बारे में विशेष जानकारी मिलती थी। साहित्य लेखन का महत्वपूर्ण उद्देश्य राजनीतिक आन्दोलन को जनव्यापी बनाना था। इसके लिए निम्नांकित पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिला और सत्याग्रह–(1940), 'द सिग्नीफिकेन्स ऑफ वूमेन इन नेशनल लाइफ– (चाँद–1932)' Message of mother in India (The Fire of Revolt) (1931) आदि। राष्ट्रीय समाचार पत्रों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ये थे, द लीडर, दैनिक जागरण, अभ्युदय आदि अखवारों ने महिलाओं में विशेष जनजाग्रति पैदा की।

Thakur, Bharti (2006) "Women in Gandhi's Mass Movement's "प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को न केवल राजनीतिक बल्कि सामाजिक व आर्थिक आन्दोलन बताया।

जिसने रूढ़वादी समाज में महिलाओं के लिए स्वतन्त्रता के दरवाजे खोले तथा महिलाओं में सम्मान की भावना पैदा की आत्म सम्मान जगाया, सामाजिक एकता पर बल दिया– महिलाओं में व्यक्तिगत आजादी पर विशेष बल दिया। लेखक ने इस पुस्तक में यह भी सिद्ध करने का प्रयास किया कि अमानवीय प्रथाओं का अन्त हो तथा सामाजिक बुराइयाँ दूर हो। गाँधी जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान महिलाओं को विशेष सम्मान मिले इसका विशेष प्रयास किया। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य महत्वपूर्ण तथ्यों का विश्लेषण करना है जिससे महिलाओं में, सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, तथा व्यक्तिगत हितो का साधन महिलाओं को मिल सके। इस पुस्तक की अध्ययन की विषयवस्तु प्रारंम्भिक स्त्रोतों पर आधारित है। महिलाओं के सम्बन्ध में महात्मा गाँधी के जो भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक उत्थान के लिए किए गए प्रयास है, वो उन्होंने अपनी पुस्तक My Experiment with Truth में व्यक्त किए है एवम् गाँधी जी ने जो पुस्तक, पत्रिका व अन्य जो भी पत्र लिखा उसमें महिला अधिकारों के लिए हमेशा, चिन्ता व्यक्त की। यह पुस्तक 6 भागों में विभाजित है तथा प्रथम अध्याय में प्रस्तावना है, दूसरे अध्याय में असहयोग आन्दोलन के कारण पर प्रकाश डाला गया है। तीसरे अध्याय में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं की सक्रियता का वर्णन किया गया है। चौथे अध्याय में भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका का वर्णन मिला है। पाँचवे अध्याय में गाँधीजी के रचनात्मक कार्यों में महिलाओं की भूमिका का वर्णन है।

Sen Bimla ¼2007½ **'Role of Women in Nation Building'** प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका विमला सेन ने लिखा है कि भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान महिलाओं ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। वे बडी बहादुरी के साथ अंग्रेजों के खिलाफ लड़ीं। तथा बहुतसारे लोगों को स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित किया। रानी लक्ष्मीबाई, भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, बेगम हजरत महल तथा झलकारीबाई आदि महिलाओं ने विशेष रूप से स्वतन्त्रता संघर्ष को प्रभावित किया। राष्ट्र निर्माण में आजादी की लड़ाई के बाद भी उनका प्रभाव जारी रहा। आजादी के बाद भी बहुत सारी महिलाओं ने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजनीति के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी भारतीय महिलाओं ने सराहनीय कार्य किया। आजादी के बाद निम्नलिखित महिलाओं ने महत्वपूर्ण राजनीतिक व सामाजिक भूमिका का निरवहन किया है जिनमें प्रमुख हैं– राजकुमारी अमृत कौर, श्रीमती इंदिरा गांधी, नन्दनी सतपती, सोनिया गांधी, ममता वनर्जी, मायावती, जयललिता, वसुंधरा राजे आदि। अन्य क्षेत्रों में जिन

महिलाओं ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। वे हैं– दुर्गाबाई देशमुख, मदरटेरेसा, मेधा पाटेकर, अरूनधती रॉय, किरन बेदी, पी.टी. ऊषा, कर्नम मल्लेश्वरी, अन्जू वावी जार्ज, लता मंगेशकर, सोनल मानसिंह, अंजली इलामेलम आदि। ऐसी प्रसिद्ध महिलाऐं हैं जिन्होंने भारतीय व्यवसाय को विशेष रूप से प्रेरित किया है उनमें प्रमुख हैं किरन मंजूमदार, एश्वर्या राय, इंदिरा नुई आदि ने अपने अपने क्षेत्रों में विशेष योगदान दिया है।

Upadhayay Lalit (2007) 'Women in Indian Politics' इस पुस्तक में लेखक ने प्राचीन समय में भारतीय समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण स्थिति का वर्णन किया है। मनु ने तो यहाँ तक कहा कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास होता है। मुगल शासनकाल के दौरान महिलाओं के अधिकारों में कमी आई। अंग्रेजी साम्राज्य में महिला अधिकारों के लिए काफी प्रयास किये गये। इसमें राजा राममोहन राय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में निम्नांकित महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ये हैं– महारानी अहिल्यावाईहोलकर, रानीलक्ष्मीबाई, नानीपाल देवी, डॉ. सरोजनी नायडू, श्रीमती उर्मिला देवी श्रीमती बंसती देवी, दुर्गाबाई देशमुख, कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित, स्वरूप रानी, लाडोरानी जुस्ती, मनमोहिनी, श्यामा देवी लतिका घोस, मीना दास, कमलादास गुप्ता, कल्यानी दास, प्रीति लता वाडेकर, डॉ. लक्ष्मी स्वामी नाथन, जानकी डावर, एनीवेसेन्ट कमला देवी, चट्टोपाध्याय, मुथुलक्ष्मी रेडी, राजकुमारी अमृत कौर, बेगम हामिद अली, रूनुका रॉय, रानी गेडालू, सरला देवी बसन्ती देवी स्वर्ण कुमारी देवी, मैडमभीकाजी कामा, अरूणाआसफ अली आदि महिलाओं ने महिला उत्थान के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय संविधान में भी महिलाओं को भी, पुरूषों के समान अधिकार दिये गये यहाँ तक कि 73वें संविधान संशोधन व 74 संविधान संशोधन से पंचायती राज संस्थाओं में भी 33 प्रतिशत महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित की गयीं हैं। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान वानर सेना का गठन करने वाली श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लालबहादुर शास्त्री के मृत्यु के बाद प्रधानमन्त्री का पद सम्भाला था। वर्तमान समय में निम्नाकिंत महिलायें प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ है जो कि भारतीय लोकतंत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। सोनिया गांधी, मायावती, निर्मला सीता रमन, ममता बनर्जी, शीला दीक्षित, स्मृति इरानी, विजय राजे सिन्धिया, मीरा कुमार, सुमित्रा

महाजन, वृन्दाकरात, रावड़ी देवी, कनीमोझी, उमा भारती, मेनका गांधी, हेमामालिनी, जया बच्चन, रेणुका चौधरी अम्बिका सौनी आदि।

Kaur, Satwindor (2013) : Role of Women in India's Struggle for Freedom प्रस्तुत लेख में लेखिका ने मातृभूमि को आजाद कराने के लिए महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि महिलाएँ भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में पुरुषों से कहीं पीछे नहीं रहीं। इनमें प्रमुख महिलाएँ थीं– भीमावाई होल्कर, रानी लक्ष्मी बाई, सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गाँधी, मैडम भीकाजी कामा, बेगम हजरत महल, अरूणा आसफ अली, एनीबेसेंट, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित, इंदिरा गाँधी आदि महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक शताब्दी के लम्बे संघर्ष के बाद भारत 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, अन्य धर्मों के लोगों ने अंग्रेजों के खिलाफ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। भीमावाई होल्कर ने ब्रिटिश कर्नल मैलकाम को 1817 में गुरिल्ला युद्ध में हरा दिया था। रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी में अंग्रेजी सेना से लड़ते हुए कर्नल ह्यूरोज को पराजित किया। सरोजिनी नायडू (भारत कोकिला) जो कि फ्रीडम फाइटर के साथ–साथ नौ अद्वितीय–कवयित्री थीं। 1917 से 1919 के बीच भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में विशेष प्रकार के उतार चढ़ाव देखे। कस्तूरबा गाँधी, मैडम भीकाजी कामा ने भी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में नई दिशा देने का प्रयास किया। बेगम हजरत महल ने 1857 की क्रांति भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐनीबेसेन्ट सोसाइटी के माध्यम से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को गति दी।

egjk=k] fi;k nhfIr ¼2013½^^fd lku u tXxh noh Lor=rk dh jkg ij^^ इस जीवनी में लेखिका ने अवध के प्रमुख किसान नेता बावा राम चन्द्र की पत्नी जो कि खुद भी एक प्रमुख महिला किसान नेता थीं के संघर्ष की कहानी को बताया है। जग्गी की यह कहानी जमीन से इतिहास लिखने का एक प्रयास है मुख्यधारा का इतिहास इस तरह के विषय की उपेक्षा करता आया है। एक संघर्षशील दलित महिला की जीवन गाथा है। जिसकी उपेक्षा दो स्तरों पर है– एक स्तर वर्ग से संबंध रखता है, तो दूसरा लिंग भेद से। लेखिका को जग्गी की जिजीविषा द्वारा प्रेरणा मिली कि भारतीय स्वतन्त्रता की लड़ाई को नए से समझूँ। जग्गी का जीवन काल अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तनों का युग था। राजनीतिक आंदोलनो के साथ वे कई स्तरों पर जुड़ी थीं। इन सब के दौरान वे न्यूनतम साधनों से किसी तरह

जीवन यापन करती रही थीं। 1930 के दशक में जग्गीदेवी ने लड़कियो की शिक्षा के लिए सामूहिक संघर्ष में भाग लिया था। जग्गी देवी ने स्वराज, शिक्षा व जीविका के मूलभूत अधिकारों के लिए उन्होनें संघर्ष किया था। आजादी के बाद आर्थिक स्थितियों में जो गहन अन्याय रहा, इसे जग्गी ने झेला भी इसे अपनी आवाज में व्यक्त भी किया । रूढ़िवादी पितृ सत्ताकार माहौल के वे बावजूद , जग्गी ने खुद को इन परिवारिक भूमिकाओं में बधने दिया, और न हीं बेचारी की भूमिका मंजूर की।

Das, K.M.(2015) Odia Woman in the Freedom Struggle of India.प्रस्तुत लेख में लेखक ने उन महिलाओं के संघर्ष का वर्णन किया है जिन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आवाहन पर भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में घर की चार दीवारी से बहार निकलकर भाग लिया। इस क्रम में उड़ीसा की महिलाओं की भूमिका को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में नकारा नहीं जा सकता है। उड़ीसा की ऐसी महिलाएं जिन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्ती भूमिका निभाई वे निम्नांकित है– रमा देवी, सरलादेवी, मालती देवी, परी बेबा, कोकिला देवी, निर्मला देवी, जानवी देवी, सुभद्रा महताब, क्षत्रमनी देवी, सुलोचना देवी, पुरूबाई, कुन्दनलता देवी, हेमलता देवी, गौरी देवी, क्रुशन त्रिपादेवी, विश्व प्रिमादेवी, मंगला सेन गुप्ता, शशी वाला शकुन्तलादेवी, किरन लेखा मोहन्ती, रत्नामली जेना, विमला दत्त, हरयवी देवी, रूकुमिनी देवी, चित्राभानु देवी, बुदवल देवी आदि। में सभी प्रसिद्ध उड़ीसा की महिलाऐं थी जिन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में उड़ीसा की भूमि से भारत को आजाद कराने के लिए अपनी मातृभूमि के लिए महात्मा गाँधी के साथ संघर्ष किया। इसके अलावा भी सामान्य वर्ग की महिलाओं ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। 23 मार्च 1921 को महात्मा गाँधी जब कटक पहुँचे तब उन्होंने रैली को सम्बोधित किया तब उनसे प्रभावित होकर, रमादेवी, सरलादेवी, सरोजिनी देवी ने तथा उनके साथ अन्य महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन में भी उड़ीसा की महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई– इनमें प्रमुख थी मालती चौधरी। उड़ीसा की महिलाओं ने शानदार भूमिका निभाई भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में

Singh Namrata (2015) The women's Question, Participation in the Indian National Movement and its impact इस लेख में लेखिका ने भारतीय समाज को दो वर्गों में बाँटा हुआ है एक है मातृ सत्तात्मक, दूसरा वर्ग है, पितृसत्तात्मक जबकि सती प्रथा का प्रचलन भी महिलाओं के जीवन को

प्रारंभिक समय से प्रभावित कर रहा है। 19वीं शताब्दी में महिला आंदोलन को काफी अधिक पुरुष सुधारको ने धार दी। 19वीं शताब्दी के उपनिवेश वादी साम्राज्यवादियों ने प्रयास किया सामाजिक जीवन से बुराई दूर हो तथा महिलाओं को पुरुषों के समान विशेष अधिकार दिये जाएं। नई उपनिवेशवादी शिक्षा राज्य के माध्यम से दी जानें लगी तथा क्रिश्चयन मिशनरियों ने भारतीय सामाजिक परिवेश बदलने का प्रयास किया। उनमें प्रमुख हैं सती प्रथा का अन्त 1829, विधवा पुर्नविवाह अधिनियम–1956, चाइल्ड मेरिज एक्ट(1972) देवदासी प्रथा का अन्त 1925 आदि। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में उदारवादी सुधारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, आदि ने इन संगठनों ने महिलाओं को शिक्षित करने का विशेष प्रयास किया। इण्डियन वोमैन ऐसोशियेसन ने नये आयाम प्रदान किये। स्वदेशी आन्दोलन से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक महिलाओं की भागीदार भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में धीरे–धीरे बढ़ती गई। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में महिलाओं के संगठन विशेष रूप से सामने आये। इनमें प्रमुख थे राष्ट्रीय स्त्रीसंघ जो कि कांग्रेस के सहयोगी संगठन के रूप में कार्य करता था। 1910 में सरला देवी चौधरानी का भारत स्त्री महान दल जिसने स्त्री शिक्षा के प्रचार प्रसार पर बल दिया। 1925 में नेशनल काउन्सिल ऑफ वोमैन इन इण्डिया की स्थापना हुई। 1927 में All India Women Conference की स्थापना हुई।

Niumai Ajaili (2018) ''Rani Gaidinliu The Iconic Women of Northeast India''इस लेख मे लेखिका ने रानी गेड़ालू जो की एक प्रसिद्ध फ्रीडम फाइटर तो थी ही इसके साथ–साथ उनके सामाजिक, आर्थिक , धार्मिक सुधार आन्दोलन जो कि उन्होंने विशेष रूप से आदिवासी समाज की महिलाओं के उत्थान कि लिए जो प्रयास किये उसका विस्तृत वर्णन किया है रानी गेड़ालू ने उतर–भारत की आदिवासी महिलाओं को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को प्ररित करने के लिए संगठित करने के जो भी प्रयास किये उसे लेखिका ने मूर्त रूप देने का प्रयास किया है। रानी गेड़ालू का जन्म 26 जनवरी 1915 को –नोंग कोंग गाँव में (मणिपुर में) कबूरी जनजाति में हुआ था। इस लेख का मुख्य उद्देश्य है रानी गेड़ालू ने कौन से प्रयास किये जिससे आदिवासी समाज की कला, संस्कृति सुरक्षित रहे। रानी गैड़ालू अंगेजी साम्राज्य के विरूद्ध साहसपूर्वक लड़ी थी। रानी गेड़ालू से प्रभावित होकर भारत में बहुत सी महिलाओं ने प्ररेणा लेकर भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

dqekj] lanhi ¼2018½ % Hkkjr ds jk"Vªoknh vkUnksyu vkSj jktuhfr esa efgyk,¡ ,oa mudk egRoiw.kZ ;ksxnku& प्रस्तुत लेख में लेखक ने भारतीय समाज में महिला आन्दोलन की व्यापक भूमिका का वर्णन किया है। महिलाओं की जागृति में राजाराम मोहन राय द्वारा स्थापित उदारवादी सामाजिक सुधार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रह्मसमाज की स्थापना करते हुए उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त घृणित सतीप्रथा की समाप्ति का आहावान किया। आगे चलकर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर विधवा पुनर्विवाह के अग्रदूत बने। आर्यसमाज के माध्यम से स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पंजाब में वैदिक सभ्यता को स्वतन्त्रता एवं मुक्त समाज को पुनर्जीवित रखने का प्रयास किया।1883 में पहली वार कोई महिला भारतीय विश्वविद्यालय से स्नातक हुई। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने महिलाओं को दक्षिण अफ्रीका में 1913 में सार्वजनिक प्रदर्शनों में उतारा था और भारतीय स्त्रीत्व की भारी राजनीतिक क्षमता का एहसास किया था। आधुनिक काल में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी अठाहरवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं बीसवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में हुई है। भारतीय राजनीतिक स्वतन्त्रता का स्वअभिप्रेरित आन्दोलन 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ आरंभ हुआ। महात्मा गाँधी ने स्वतन्त्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का समर्थन किया। उन्होंने महिलाओं से स्वदेशी आन्दोलन में उपवास करने, विदेशी वस्त्रों को त्यागकर खादी वस्त्र धारण करने की अपील की। आजादी के बाद विशिष्ट वर्गीय महिलाओं ने मताधिकार संबन्धी अपनी लड़ाई भी जीत ली थी।

'kekZ] nso'kpUnz ¼\½ ^'kghnr ,d chjkaxuk egkjkuh y{ehckbZ dh* इस लेख में लेखक ने 1857 के विद्रोह का वर्णन किया है जिसकी शुरूआत मंगल पाण्डे द्वारा बंगाल स्थित बैरकपुर छावनी से की गई थी। यह आंदोलन शीध्र ही सम्पूर्ण भारत में फैलता चला गया। मेरठ, दिल्ली, कानपुर, अवध, बिहार, बुन्देलखण्ड, महाकौशल आदि स्थानों पर भारतीय राजा महाराजाओं सैनिक और जनसमुदाय अंग्रेजी प्रभुसत्ता को उखाड फैंकने के लिये एकजुट हो गया था। मध्य भारत में जन संघर्ष के केन्द्र बिंदु झाँसी ग्वालियर और इन्दौर पर सबकी नजर थी। क्रांति ज्योति महारानी लक्ष्मी बाई के नेतृत्व में 6 जून 1857 को झाँसी में अंग्रेजी प्रभुसत्ता के विरूद्ध जयघोष प्रारम्भ हो गया। झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को टक्कर देने के लिये सैनिक एवं अन्य तैयारियों में लगी थी। अंग्रेजों के विरूद्ध एकजुट होने

के लिये अपने समकालीन राज–रजवाड़ों से पत्राचार कर भारत की दुर्दशा, कम्पनी के अन्याय अत्याचार का वर्णन करते हुये क्रांति के लिये एकजुटता और तैयारियों की आवश्यकता को बार–बार रेखांकित किया गया था। अंग्रेज अंधिकारी झाँसी और ग्वालियर में सुलग रही राष्ट्रीयता की ज्योति को कुचल डालना चाहते थे। 1857 ई के प्रथम स्वतंत्रता संग्प्रम की वह प्रथम महानतम नारी थी जिसने मातृभूमि के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

Rani Pushpa (?) 'Women's who made history' इस लेख में लेखिका पुष्पा रानी ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि भारतीय समाज में नारी प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक अपने परिवार के प्रति समर्पित रही हैं। महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था इतना ही नहीं बल्कि उन्हें घर से बहार निकलने की अनुमति नहीं थी। भारत में महिलाओं को दोयम दर्जे का इंसान माना जाता था। मध्यकाल में मुगल विजेता भारत में पर्दा प्रथा लाये। इस काल में बहु विवाह प्रथा, दासी प्रथा प्रचलन में थी। भक्ति आंदोलन के दौरान भारत में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार आया इस काल में मीराबाई एक प्रमुख महिला सन्त थीं। गुरूनानक ने महिलाओं को समान अधिकार देने की बात की । उन्होंने भारतीय महिलाओं के लिए मिशनरियाँ स्थापित कीं। इसका परिणाम यह हुआ कि सिंधी महिलाओं ने शानदार इतिहास रचा। इस काल की प्रमुख महिलायें भी माता तृप्ता, बेबी ननको, माता बीबी, बीबी अमरो, माता गुजरी थीं। आधुनिक काल में कर्नाटक की कित्तूर की रानी चेन्नमा, रानी लक्ष्मी बाई, परमाबाई सावित्री बाई फुले, कमलादास, एनीवेसेन्ट कस्तूरबा गाँधी मुथुलक्ष्मी रेड्डी, सरोजिनी नायडू आदि महिलाओं ने महत्वपूर्णभूमिका निभाई।

flg] efgiky]¼\½ ^1857 d Lor=rk l?k"k e vcrhckb yk/kh* लेखक ने इस लेख में रामगढ़ (म.प्र.) की रानी की शौर्य गाथा का वर्णन किया है। अंग्रेजों ने रामगढ़ राज्य को 13 सितम्बर 1851 में कोर्ट ऑफ बाइस के अधीन कर दिया गया। जिसका अबंती बाई लोधी ने तीब्र विरोध किया। रानी ने अपने हाथों से लिखकर सभी राजा महाराजा, जमीदार मालगुजार आदि के पास लिखित संदेश भिजवाकर 1857 ई. में विजय दशवीं के दिन सभी हथियार तैयार कर लें अंग्रेजों का उस दिन सफाया कर दिया जायेगा। देश व आन के लिए मर मिट जाओं या चूड़ियाँ पहनकर अपने घरों में बैठ जाओ। रानी ने अपने गुप्तचरों के माध्यम से ये संदेश, पाटन, सागर, जबलपुर, मण्डला, कामठीव दामोह की

छावनियों में भी भिजवाया। सलीमनाबाद की छावनी में विश्वसनीय गुप्तचर मनकी जो नाचने गाने वाली का रूप बनाकर अंग्रेज अफसर व देशी सैनिकों का मनोरंजन लोक गीत के रूप में क्रान्ति का संन्देश देने लगी। इस प्रकार ज्ञात होता है कि रानी अबन्ती बाई ने क्रान्ति का प्रचार बड़ी ही योजना अनुसार सही समय पर किया था। जब 18 सितम्बर 1857 ई. को मण्डला नरेश शंकर शाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह को जवलपुर कमिश्नरी में तोप से उड़ा दिया गया। तब राम गढ़ की रानी ने विद्रोह कर दिया और रामगढ़ से सरकारी अधिकारियों को निकाल भगाया। अन्त में अबन्ती बाई अपने मुट्ठी भर देश भक्त सैनिकों के साथ अन्तिम समय तक शत्रु से मोर्चा लेती रहीं। और अन्त में सैनिकों के हाथों जीवित के बजाय अपने पूर्वज दुर्गावती का अनुसरण करते हुए अपनी तलवार अपने सीने में घौप ली। अतः रानी अबन्तीबाई लोधी मर कर भी अमर हैं और वह भारत की वर्तमान पीढ़ी को हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।

x|Irk] v:.k] oek] j?kuUnu]¼\½ ^e|t¶Qj uxj tuin dh ØkfUrdkjh ohjkxuk,¡'1857 की क्रांति में भारत का पश्चिमी क्षेत्र मुजफ्फर नगर क्रान्ति का मुख्य केन्द्र था। मुजफ्फर नगर की हर जाति तथा वर्ग की महिलायें जंग ऐ आजादी में मजबूत संगठन बनाकर टूट पड़ीं थीं। ये सभी वीरांगनाऐं 18 से 24वर्ष की आयु की थीं। सभी जातियों की महिलाओं यथा ब्राह्मण, गड़रिया, गुर्जर, बाल्मीकि, जाट, मुसलमान जाति आदि की महिलायें थीं। सभी मध्यमवर्गतथा कमजोर घरानों की किसान महिलाएं थीं। यदि वे महिलायें किसी राज्य की रानी या राजमाता होती तो झॉसी की रानी की तरह दिखाया होता। क्योंकि ये सब साधारण किसान और मजदूर घरानों की बहू बेटियाँ थीं। अतः इतिहासकार उनके नाम भूलकर आगे की ओर चलते गये। इसमें मुख्य वीरांगनाऐं निम्न हैं– श्री आशादेवी गुज्जर, बख्तारदेवी, भगवती देवी त्यागी, श्रीमती हवीबा खातून गुज्जर, शोभा देवी ब्राह्मणी, श्रीमती मामकौर गडरिया, भगवान देवी, इंदरकौर जाट, जमीला पठान, रहीमा राजपूत, राजकौर राजपूत, रणवीरी बाल्मीकि आदि महिलाओं ने अपनी अपनी टोली बनाकर क्रान्ति में सहयोग दिया था। दुर्भाग्यवश ये सभी पकड़ी गयीं। गद्दारों ने इन्हें पकड़वाने में अंग्रेजों की सहायता की व सभी वीरांगनाओं को फाँसी पर लटका दिया गया। हजारों महिलाओं ने क्रांति में योगदान दिया। 255 महिलाऐं फाँसी पर

चढ़ा दी गयी और कुछ लड़ते–लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गयीं। इनके अलावा थाना भवन काजी खानदान की श्रीमती असगरी बेगम को पकड़कर जिन्दा जला दिया गया था।

pkSgku] MkW- ehuk{kh] ¼\½ Hkkjrh; ukjh dk ;ksxnku dh xkSjoe;h xkFkk 1857 dk fonzkg* इस लेख में डॉ. मीनाक्षी चौहान ने 1857 के विद्रोह में भारतीय वीर पुरूषों के साथ साथ भारतीय वीर नारियों के योगदान का विवरण दिया है। इस विद्रोह में जहाँ एक ओर रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, रानी अवंतीबाई जैसी राजनायिकाओं ने अपने राज्य की सेनाओं का नेतृत्व करते हुये अंग्रेजों के छक्के छुड़ाये। वहीं दूसरी ओर कुछ सामान्य वर्गकी महिलाओं की भागीदारी कम न थीं, इस वर्ग में भगवती देवी, इन्द्रकौर, जमीला आदि महिलायें प्रमुख थीं। इन्हीं के साथ एक अन्य वर्ग दलित वर्ग था। इस वर्ग की महिलाओं की गाथा प्रत्येक भारतीय नारी के लिये प्रेरणा श्रोत है। यह महिलायें दलित पुरूषों की तुलना से कहीं अधिक थीं। इन महिलाओं में कोरी जाति की झलकारी बाई, पासी जाति की ऊदा देवी, मेहतर जाति की महावीरी देवी और गुर्जर जाति की आशा देवी आदि थीं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश से ही पचास से ज्यादा महिलाओं ने इस विद्रोह में भागीदारी की और मौत को गले लगाया। असगरी बेगम, बखतावरी, भगवती देवी रहीमो, उम्दा, शोभा देवी और मामकौर आदि प्रमुख थीं। आदिवासी समाज से भी महिलाओं की भूमिका रही जैसे सुरसी (भील)। इन सभी के अतिरिक्त एक ऐसी महिला की जानकारी मिलती है जिसने दिल्ली क्षेत्र के अन्तर्गत अंग्रेजी सेना को चुनौती दी थी। इस महिला का नाम ज्ञात नहीं है। ब्रिटिश सैनिकों ने दिल्ली केअन्दर महिलाओं का वर्चस्व देखकर कहा कि स्त्रियाँ पुरूषों से भी खराब हैं भारतीय महिलाओं ने भारतीय स्वाधीनता के युद्ध में संगठित रूप से अंग्रेजों को चुनौती दी थी।

tSnh] MkW- tkfon] ¼\½ ^tax vktknh vkSj ohjkaxuk;s* प्रस्तुत लेख में लेखक ने आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका का विवरण दिया है। चाहे वह मध्यकाल हो और चाहे वह आधुनिक काल हो प्रत्येक काल में महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। पौराणिक काल में देवासुर संग्राम की चर्चा मिलती है। जिसमें कैकेयी द्वारा राजा दशरथ के लिये विजयी होने के संकेत मिलते हैं। कश्मीर की रानी दिद्दा का वर्णन भी मिलता है। मध्यकाल में रजिया सुल्तान दिल्ली की शासिका बनी। शिवाजी की माँ जीजाबाई का शिवाजी के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान रहा। बेगम, समरू (सरधने) एक ऐसी महिला थी,

जिन्होंने राजनीतिक दांवपेच कूटनीतिक चालों और युद्ध भूमि में पुरूषों को हराया। अनेक जन आंदोलनों में भी महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। कित्तूर की रानी चेनम्मा ने ईस्टइंण्डिया कम्पनी की शक्तिशाली सेना को चुनौती दी थी। प्रथम क्रांतिकारी रानी लक्ष्मी बाई ने भी अंग्रेजों को नाको चने चबा दिये थे। इस प्रकार लेखक ने अन्य महिलाओं का वर्णन किया है जैसे अवध की बेंगम हजरत महल, अवन्ती बाई लोधी, कुमारी मैना, तपस्विनी, झलकारी बाई,नर्तकी अजीजन, इसके अतिरिक्त, मुजफ्फरनगर में असगरी बेगम, भगवती, जमीला, केहरी, इंद्रकौर, हबीबा, आशा देवी, रहीमी, राजकौर, मामकौर, रणबीरी आदि महिलाओं को अंग्रेजों द्वारा फांसी दी गयी। इसी के साथ–साथ सरोजनी नायडू, श्रीमती एनी बेसेंट, मीरा बेन, कस्तूरबा गाँधी थीं। प्रीतिलता, कल्परा दत्त चटगांव काड की सबसे विश्वस्त महिलायें थीं। इसके अतिरिक्त दुर्गाभाभी, अरूणा आसफ अली,सुचेता कृपलानी, डॉ. लक्ष्मी स्वामी नाथन, रानी गायडीयनलू आदि और अन्य ऐसी महिलाओं का वर्णन किया है

mnn';

1. प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष (1857) में महिलाओं की सहभागिता का अध्ययन करना।
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारम्भिक काल में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना (1885–1916)
3. गाँधी युग में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता का अध्ययन करना। (1917–1947)

ifjdYiuk

1.प्रथम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदानदृष्टिगोचर होता है।

2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारम्भिक काल में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान निम्न है।

3.गांधीयुग में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण सहभागिता रही।

'kk/k çjpuk

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए आवश्यक तथ्य संकलन प्राथमिक व द्वितीय स्रोतों पर आधारित है। जिनमें प्रमुख रूप

से पुस्तकें पत्र पत्रिकायें, जनरल, लेख, समाचार पत्र, वेबसाइट्स आदि का प्रयोग किया गया है। यह अध्ययन अंतःवस्तु तथा विश्लेषण की पद्धति पर आधारित है।

v/; ;u dk egRo

भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता आंदोलन एक महत्वपूर्ण काल है। स्वंतत्रता के संघर्ष में समाज के कई वर्गों व समुदायों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने–अपने स्तर पर योगदान दिया है। 1857 की क्रांति में कई लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विभिन्न एतिहासिक अध्ययनों से पता चलता है कि पुरूषों का योगदान विस्तृत रूप में देखने को मिलता है जब कि महिलाओं की स्थिति इससे अलग है। स्वतंत्रता आंदोलन में ऐसी महिलाओं का नाम तो इतिहास में दर्ज है जो राजघरानों या अभिजन वर्ग की थी। इस शोध के माध्यम से हम उन महिलाओं के नामों को रेखांकित करने का प्रयास करेंगे जिनका राष्ट्रीय आंदोलन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण योगदान रहा। परन्तु इतिहास में उनके नाम अदृश्य हैं। कई एसी महिलायें थीं जिन्होंने स्वतंत्रता के संघर्ष में अपने प्राणों की आहूति दे दी। प्रस्तुत शोध के माध्यम से उन पराक्रमी एवं वीर महिलाओं की वीरता का उल्लेख किया जायेगा। ताकि वे आने वाली पीढ़ी के लिये प्रेरणादायी बने। यह शोध कर्ताओं शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं सरकार की नीति के निर्माण में सहायक होगा।

iLrkfor v/;k;hdj.k

1. प्रस्तावना
2. 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं
3. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारम्भिक काल में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान (1885–1916)

   अ. उदारवादी   ब. उग्रवादी
4. गांधी युग में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सहभागिता (1917–1947)
5. निष्कर्ष

l UnHkZ lwph

- बासु, अपर्णाः ''रोल ऑफ विमेन इन द फ्रीडम मूवमैट'' दिल्लीः इन बी. आर. नन्दा एड इण्डियन वूमेन फ्राम पोरडाहटू मॉडरनिटी विकास, 1976.
- राजू, राजेन्द्र वीः ''रोल ऑफ विमेन इन इडियाज फ्रीडम स्ट्रगल'' डिस्कवरी पब्लिशिंगहाउस,1994.
- सरस, सिंह थम्मनः ''अवन्ती बाई लोधी 1857 की अमर बलिदानी'' साहित्य केन्द्र प्रकाशन , 1995.
- मोड़ी, बी. नवाजः ''विमेन इन इण्यिन फ्रीडम स्ट्रगल'' एलाइड पब्लिशर्स, 2000.
- हसन, अनवरः ''मुस्लिम विमेन स्ट्रगल फॉर फ्रीडम इन कोलोनियल बंगाल 1873–1940'' बंगालःप्रोगेसिव पब्लिकेशन्स , 2003.
- तनेजा, अनूपः ''गांधी विमेन एण्ड द नेशनल मूवमैण्ट 1920–47'' हर आन्नद पब्लिकेशनस, 2005.
- ठाकुर , भारतीः ''विमेन इन गॉधी मास मूवमैण्ट'' न्यू दिल्लीः दीप एण्ड दीप पाब्लिकेशनस,2006.
- थापर–बजोरकर्ट, सुरूचिः ''विमेन इन नेशनल मूवमैटं अनसीन फेसिस एण्ड अनहर्ड वायसिस 1930–1942'' न्यू दिल्लीः सेज पब्लिकेशनस्, 2006.
- सेन, बिमलाः ''रोल ऑफ विमेनस नेशन बिल्डिगं'' चड़ीगढ़ः अभिषेक पब्लिकेशन्स, 2007.
- उपाध्याय, ललितः ''विमेन इन इण्डियन पॉलिटिक्स'' पंचकुलाः बैटर बुक्स पब्लिकेशन 2007.
- गुप्तामोहिनी, गुप्त विश्व प्रकाशः ''स्वतन्त्रता संग्राम और महिलायें'' राधा पब्लिकेशन्स,2008.
- अग्रवाल, जी.एम.लॉयनः ''फ्रीडम फाइटर्स ऑफ इंण्डिया'' इसा पब्लिकेशनस दिल्ली, 2008 pp 278.
- महरोत्रा, प्रिया, दीप्तिः ''किसानिन जग्गी देवी स्वतन्त्रता की राह पर'' नई दिल्लीः सम्पूर्णट्रस्ट बी26 स्वामीनगर, 2013.
- कौर, सतविंदरः ''रोल ऑफ विमेन इन इण्डियाज स्ट्रगल फॉर फ्रीडम'' इंटरनेशनल जनरल ऑफ मैनेजमैण्ट एण्ड सोशल सांइसेज रिसर्च, वॉल्यूम 2, अप्रैल 2013.
- गनमुखी, डी. जेः ''द रोल ऑफ विमेन इन इंण्डिया फ्रीडम मूवमेण्ट 1857–1947,'' डिपार्टमेन्ट ऑफ स्टडीज एण्ड रिसर्च इन पॉलिटिकल सांइस गुलबर्ग, 2014.

- दास, के. एमः ''उडिया विमेन इन द फ्रिडम स्ट्रगल ऑफ इण्डिया'' इण्टरनेशनल इनवेंटिव मल्टी डिश्प्लनरी जनरल, इनवेंटिव पब्लिकेशन्स, वाल्यूम, 3 जून 2015.
- रानी , पुष्पाः ''विमेन हू मेड हिस्ट्री'' थर्ड कॉसेप्ट, नवम्बर 2015, p–15
- खुराना, एल. के, चौहान एस.एमः ''भारतीय इतिहास में महिलाये'' आगरा, ,लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, 2016.
- सिहं, नम्रताः ''द विमेन क्वशचनः पार्टीसिपेशन इन द इण्डियन नेशनल मूवमैण्ट एण्ड इटस इम्पैक्ट'' आई ओ एस आर जनरल ऑफ हयूमनटीज एण्ड सोशल सांइस, वाल्यूम 20, अप्रैल 2018 P 23–26.
- नूमई, अजैलूः ''रानी गेडानालियू द आइकॉनिक वूमैन ऑफ नॉर्थईस्ट इण्डिया'' जनरल ऑफ जैन्डर स्टडीज सेज पब्लिकेशन्स, 2018,pp 351–367.
- वासु, अपर्णाः ''विमेन इन गाँधीयन मास मूवमैन्टस इण्डियन'' इण्यिन जनरल ऑफ जैण्डर स्टडीज, सेज पब्लिकेशन्स, 2018 pp 127-133.
- मित्तल , के. एसः ''साझी शहादत के कुछ फूल 1857 ए सागा ऑफ सैक्रीफाइसिस''नई दिल्लीःनेहरू यूवा केन्द्र ?.